नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

प्रधानमंत्री की मणिपुर यात्रा के संदेश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मणिपुर दौरा, हिंसा के दो वर्ष बाद भले ही देर से हुआ हो, लेकिन उसका संदेश स्पष्ट और ठोस था—शांति और विकास ही राज्य की असली दिशा है. 7,000 करोड़ रुपए की विकास परियोजनाएं और विस्थापित परिवारों के लिए 3,000 करोड़ रुप का पैकेज यह दर्शाता है कि केंद्र सरकार केवल शब्दों में नहीं, बल्कि ठोस योजनाओं के साथ मैदान में उतरी है .

मणिपुर की समस्या केवल कानून-व्यवस्था की नहीं है. यह राज्य की पहचान, जातीय अस्मिता और दशकों से पनपे अविश्वास की समस्या है. कुकी और मैतेई समुदाय के बीच बढ़ती दूरी, नागा समाज की अलग चिंताएं और स्थानीय नेतृत्व की सीमाएं,इन सबने हालात को और कठिन बना दिया है. यहां सिर्फ पैकेज से समाधान नहीं होगा, बल्कि विश्वास की पुनर्बहाली ही स्थायी रास्ता है.मोदी ने चुराचांदपुर जाकर कुकी परिवारों से मुलाकात की और इंफाल में लोगों को संबोधित कर एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संकेत दिया कि सरकार मणिपुर के हर समुदाय के साथ खड़ी है. सड़कों, शहरी विकास और आईटी सेक्टर पर जोर देकर उन्होंने यह भी जताया कि मणिपुर को अलगाव से निकालकर अवसरों की मुख्यधारा में लाना ही लक्ष्य है.अब चुनौती यह है कि घोषणाओं को जमीनी हकीकत में कैसे बदला जाए. राजनीतिक स्तर पर केंद्र और राज्य को मिलकर एक निष्पक्ष और पारदर्शी नेतृत्व देना होगा. इसी के साथ सामाजिक स्तर पर मणिपुर के संघर्षरत समुदायों के बीच संवाद और शांति समितियां बनाकर विश्वास बहाली करनी होगी.

आर्थिक स्तर पर युवाओं के लिए रोजगार और स्थानीय उद्योग को बढ़ावा देना अनिवार्य है. यही हिंसा की जमीन को कमजोर करेगा.

दरअसल,मणिपुर आज भी जातीय विभाजन और अविश्वास की आग से जूझ रहा है.2023 की हिंसा ने राज्य की एकता को गहरी चोट दी. प्रधानमंत्री मोदी की हालिया यात्रा और विकास पैकेज उम्मीद की किरण जरूर है, पर स्थायी समाधान केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति, सामाजिक संवाद और आर्थिक अवसरों से ही संभव होगा. मणिपुर की विविधता उसकी ताकत है, बशर्ते उसे संघर्ष का कारण नहीं, सहयोग का आधार बनाया जाए.

कुल मिलाकर मणिपुर की धरती विविधताओं से भरी है. यही विविधता यदि सहयोग की शक्ति बने तो राज्य प्रगति की राह पर तेजी से आगे बढ़ सकता है. प्रधानमंत्री मोदी ने सही कहा कि मणिपुर आशा और आकांक्षाओं की भूमि है. अब यह आशा तभी साकार होगी जब शांति स्थायी बने और विकास का लाभ हर समुदाय तक पहुंचे.

विंध्य की डायरी

राजनीति के सफेद शेर की मूर्ति से जुड़ी राजनीति

डॉ. रवि तिवारी

छप्पन इंच सीने की राजनीति करने वाले विन्ध्य के इतिहास को दफन करने की ऐसी नाकाम कोशिश कर रहे हैं. जिसको लेकर अब जो चर्चाएँ हो रही हैं उससे उनकी भावी राजनीति पर असर होना लाजमी है. समय ने विन्ध्य की तकदीर पर कुछ ऐसी लकीरें खींच रखी है जिसके धूमिल होने की संभावना न के बराबर हैं. विन्ध्य के सफेद शेर दादा श्रीनिवास तिवारी की कहानी कुछ ऐसी ही हैं.

देर से ही सत्ता को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने अपने बढ़े हुए कदमो को सिकोड़ लिया. नही तो इस बार ऐसा लगने लगा था की यदि बात बढ़ी तो विन्ध्य के इतिहास में कुछ ऐसा होगा जिसकी कल्पना किसी के निगाह में नही है.

खैर देर आए दुरस्त आए दादा श्रीयुत की मूर्ति अब वही लगेगी जहाँ के लिए पूर्व में सहमति बनी थी. यह बात अलग है कि पुलिस महकमे से समाज के एक बड़े वर्ग से जो दुश्मनी हो गई है. उसके परिणाम भी उन्हें आगे झेलने के लिए विवश होना पड़ेगा. श्रीयुत सिर्फ कांग्रेस के नेता ही नही थे बल्कि विंध्य की आत्मा और पहचान थे. 'सफेद शेर' कहे जाने वाले निर्भीक व्यक्तित्व ने जिस तरह प्रदेश की राजनीति को नई दिशा देने के साथ गरीब, किसान, आम आदमी के हक की लड़ाई लड़ी वह आज भी स्मरणीय है. जन-जन के नायक की स्मृतियां सभी के दिलो में है जिसे कभी भुलाया नही जा सकता. श्रीयुत का सम्मान सिर्फ कांग्रेस की जिम्मेदारी नही बल्कि सभी का कर्तव्य भी है. इस बार कांग्रेस उनकी जन्म शताब्दी पर 17 सितम्बर को भव्य प्रतिमा का अनावरण करने जा रही है और श्रीयुत शताब्दी पर्व विंध्य के गौरव का ऐतिहासिक क्षण होगा. साथ ही कांग्रेस महासम्मेलन के बहाने अपना राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन भी करेगी

भाजपा का जातीय संतुलन

विंध्य में जातिगत समीकरण बनाने के कई हथकंडे अपनाए जाते है और यहा की राजनीति भी जातीय समीकरण के इर्दगिर्द घूमती है. दरअसल कांग्रेस में जातिवाद को लेकर एक नया सवाल खड़ा कर दिया गया है और इसे आधार बनाकर मोर्चा खोल दिया गया है. कांग्रेस जातिवाद की खीचतान से कमजोर पड़ रही है, यही वजह है कि सत्ता के दौड़ से बाहर है. वही भाजपा लगातार जातीय संतुलन साधने में सफल रही है. संगठनात्मक नियुक्तियों से लेकर मंत्री मंडल तक भाजपा में हर प्रमुख जाति को हिस्सेदारी दी है. परिणाम स्वरूप हर वर्ग भाजपा के साथ मजबूती से खड़े नजर आते है. जिला संगठन को लेकर भाजपा में जातीय संतुलन बनाया जा रहा है. भले ही रीवा संगठन की सूची अटकी है पर कहीं न कहीं इसकी पीछे जातीय संतुलन ही है. आगामी आने वाले चुनाव में किसी तरह का नुकसान न हो, यह भी देखा जा रहा है. कांग्रेस उठे जातिवादी असंतोष को अगर दूर नही करती तो भाजपा इस असंतोष का लाभ उठाकर अपनी जड़े विंध्य में और मजबूत कर सकती है.

कांग्रेस का यह रूप बहुत दिन बाद दिखा

किसी भी पार्टी की मजबूती का आधार उसकी संगठन क्षमता और अनुशासन के साथ जनता के हितों के लिये मजबूती से खड़ा रहना माना जाता है . अन्नदाता खाद की समस्या से जूझ रहे है, किसानो की आवाज बनकर कांग्रेसी जिस तरह से सडक पर उतरे और केन्द्रीय कृषि मंत्री के काफिले को रोक कर सत्ता की आंखो में आंख डाल कर जनता की पीड़ा को रखा यह कांग्रेस का रूप वर्षो बाद दिखाई दिया . दरअसल गुरूवार को केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान सतना पहुंचे . खाद की समस्या को लेकर जिले के नवनियुक्त जिला अध्यक्ष विधायक सिद्धार्थ कुशवाहा ने काफिले को रोक कर किसानो की पीड़ा में केन्द्रीय मंत्री को घेरा . विपक्ष की सशक्त भूमिका को कांग्रेस भूल गई थी, चक्काजाम, नारेबाजी, सडक पर उतर कर आन्दोलन को भी कांग्रेस ने भुला दिया था पर अब बदलाव की बयार चल चुकी है जो कांग्रेस को आगे जमीनी ऊर्जा देगी . यहा गौर करने वाले बात यह रही कि प्रदर्शन में दमदारी थी पर शालीनता और संयम का राजनीतिक तकाजा भी देखने को मिला .

पतन से प्रगति तक

पीएम मोदी कैसे गढ़ रहे हैं नया शहरी भारत

हरदीप सिंह पुरी

> एक्सप्रेसवे अब शहरों के बीच की आवाजाही का नया चेहरा बन रहे हैं . दिल्ली .मुंबई एक्सप्रेसवेए बेंगलुरु .मैसूरु एक्सप्रेसवे, दिल्ली . मेरठ एक्सेस .नियंत्रित कॉरिडोर और मुंबई कोस्टल रोड ने दूरी घटा दी है और बड़े वाहनों को शहर की गलियों से बाहर निकालकर हवा को साफ़किया है . मुंबई में देश का सबसे लंबा समुद्री पुल अटल सेतु अब टापू जैसे शहर को मुख्य भूमि से सीधे जोड़ता है . मुंबई .अहमदाबाद हाई .स्पीड रेल, भारत की पहली बुलेट ट्रेन परियोजनाएं तेज़ी से आगे बढ़ रही है और पश्चिम भारत में विकास का नया केंद्र बनने जा रही है .

रोम एक दिन में नहीं बना था,ए वैसे ही नया शहरी भारत भी एक दिन में नहीं बनेगा. लेकिन जब हम अपने शहरों से और अधिक की अपेक्षा करते हैं, तो हमें यह भी देखना चाहिए कि हम पहले ही कितनी दूरी तय कर चुके हैं. आजादी के दशकों बाद तक, भारत के शहर एक उपेक्षित विचार थे. नेहरू की सोवियत शैली की केंद्रीकृत सोच ने हमें शास्त्री भवन और उद्योग भवन जैसे कंक्रीट के विशाल भवन दिए, जो 1990 के दशक तक ही ढहने लगे थे और सेवा के बजाय नौकरशाही के स्मारक बनकर रह गए.

2010 के दशक तक दिल्ली की हालत बहुत खराब थी. सड़कों पर गड्ढे थे, सरकारी इमारतें पुरानी, बदरंग और टपकती छतों वाली थीं और एनसीआर की बाहरी सड़कों पर हमेशा जाम लगा रहता था. एक्सप्रेसवे बहुत कम थे, मेट्रो कुछ ही शहरों तक सीमित थी और बुनियादी ढांचा तेजी से टूट-फूट का शिकार हो रहा था. दुनिया का नेतृत्व करने का सपना देखने वाले देश की राजधानी उपेक्षा और बदहाल स्थिति का प्रतीक बन चुकी थी.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हालात को बदल दिया. उन्होंने शहरों को बोझ नहीं माना, बल्कि उन्हें विकास के इंजन और राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक बनाया. यह बदलाव आज हर जगह दिखाई देता है. सेंट्रल विस्टा के पुनर्निर्माण ने कर्तव्य पथ को जनता की जगह बना दिया, नई संसद को भविष्य के अनुरूप संस्थान में बदल दिया और कर्तव्य भवन को सुचारु प्रशासनिक केंद्र बना दिया. जहां पहले जर्जर हालत थी, वहां अब महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास दिखता है.

इस बदलाव का पैमाना आंकड़ों से समझा जा सकता है. 2004 से 2014 के बीच शहरी क्षेत्र में केंद्र सरकार का कुल निवेश लगभग रु.1.57 लाख करोड़ था. 2014 के बाद से यह 16 गुना बढ़कर लगभग रु. 28.5 लाख करोड़ हो गया है. 2025-26 के बजट में ही आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय को रु. 96,777 करोड़ दिए गए, जिसमें एक-तिहाई हिस्सा मेट्रो के लिए और एक-चौथाई आवास के लिए रखा गया. इतना बड़ा वित्तीय निवेश स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ और इससे अभूतपूर्व रूप से शहरी ढांचे का स्वरूप बदल रहा है.

भारत की व्यापक आर्थिक और डिजिटल प्रगति ने इस रफ्तार को और तेज कर दिया है. आज हम लगभग 4.2 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के साथ दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं, जहां डिजिटल व्यवस्था रोजमर्रा की जिंदगी को चला रही है. यूपीआई ने अभी हाल ही में एक महीने में 20 अरब लेन.देन का आंकड़ा पार किया और हर महीने रु. 24 लाख करोड़ से ज़्यादा के लेन.देन संभाल रहा है. अब 90 करोड़ से अधिक भारतीय इंटरनेट से जुड़े हुए हैं और 56 करोड़ जनधन खाते जैम त्रिमूर्ति (जनधन, आधार, मोबाइल) का आधार हैं, जिसके ज़रिये सब्सिडी सीधे और पारदर्शी रूप से दी जाती है. यह पैमाना, औपचारिकता और फिनटेक अपनाने का मॉडल पूरी तरह भारतीय है और इसका असर सबसे गहरा शहरी क्षेत्रों पर दिखाई देता है.

मेट्रो क्रांति जमीन पर हुए बदलाव को सबसे अच्छी तरह दिखाती है. 2014 में भारत में सिर्फ़5 शहरों में लगभग 248 किलोमीटर मेट्रो लाइन चल रही थी. आज यह बढ़कर 23 से अधिक शहरों में 1,000 किलोमीटर से ज़्यादा हो गई है, जो हर दिन एक करोड़ से अधिक यात्रियों को ढोती है. पुणे, नागपुर, सूरत और आगरा जैसे शहरों में नए कॉरिडोर बन रहे हैं, जिससे सफ़र तेज़, सुरक्षित और प्रदूषण.रहित हो रहा है. यह सिर्फ़लोहे और कंक्रीट का ढांचा नहीं है, बल्कि इसमें लोगों का समय बचना, हवा का साफ़ होना और नागरिकों को करोड़ों घंटे की अतिरिक्त उत्पादकता मिलना शामिल है.

शहरी कनेक्टिविटी की तस्वीर पूरी तरह बदल गई है. एनसीआर के जाम से भरे इलाकों को नई बनी यूईआर (दिल्ली की तीसरी रिंग रोड) से राहत मिल रही है, जो एनएच.44, एनएच.9 और द्वारका एक्सप्रेसवे को जोड़कर पुराने जाम के बिंदुओं को आसान बना रही है. भारत की पहली क्षेत्रीय तेज़ यातायात प्रणाली, दिल्ली, मेरठ आरआरटीएस (नमो भारत) पहले ही बड़े हिस्से पर चल रही है और पूरा संचालन जल्द ही शुरू होने वाला है, जिससे पूरा सफ़र एक घंटे से कम समय में तय होगा. ये तेज़ और एकीकृत परिवहन प्रणालियां नए भारत के लिए एक नई महानगरीय सोच को आकार दे रही हैं.

(लेखक केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हैं)

चीन पर कितना भरोसा किया जाए

भारत से काफी कम आयात कर चीन अपना ज्यादा से ज्यादा माल भारत में खपाना चाहता है. ताली एक हाथ से नहीं बजती. चीन को अपने इरादों और व्यवहार में ईमानदारी दिखानी चाहिए.

प्रधानमंत्री मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की आपसी चर्चा में इस बात पर जोर दिया गया कि भारत और चीन एक-दूसरे के विरोधी न रहकर विकास में भागीदार हो सकते हैं तथा आपसी मतभेदों को विवाद में नहीं बदलने दिया जाना चाहिए . वर्षों के अविश्वास के बाद तनाव कम करने का संकेत इस तरह के बयान से मिलता है लेकिन फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि चीन हर बात में पहले अपना स्वार्थ और फायदा देखता है . उसकी विदेश नीति में किसी प्रकार की उदारता या सामंजस्य का लेष मात्र भी नहीं है . 1962 में चीन ने भारत पर हमला यह दिखाने के लिए किया था कि एशिया में वही बिग ब्रदर की हैसियत रखता था . इससे प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के किए-कराए पर पानी फिर गया था . विश्व शांति, आपसी सहयोग के उद्देश्य से नेहरू ने 1947 में एशियाई संबंध परिषद बुलाई थी और फिर 1955 में गुटनिरपेक्ष देशों का बांडुंग सम्मेलन हुआ था . शांति दूत के रूप में नेहरू की छवि को गहरी क्षति पहुंचाने के लिए चीन ने पंचशील समझौते को रौंदते हुए आक्रामण कर दिया था . गलवान की हिंसक झड़प और लद्दाख में घुसपैठ ने फिर दिखा दिया कि चीन बिल्कुल भरोसेमंद नहीं है . इस समय चीन का रुख इसलिए नरम पड़ा है क्योंकि ट्रंप ने चीनी सामान पर 30 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया और उसे 145 प्रतिशत तक बढ़ाने की धमकी दे डाली . अब एशिया की दोनों अर्थव्यवस्थाओं भारत व चीन के सामने व्यापारिक सहयोग बढ़ाने की जरूरत आ पड़ी है . इतने पर भी चीन के रवैये में ईमानदारी नजर नहीं आती . उसने तमिलनाडु व कर्नाटक की आई फोन 17 बनानेवाली फॉक्सकॉन फैक्टरी से अपने 17 इंजीनियरों को वापस चीन बुला लिया . ई-वाहनों तथा इलेक्ट्रानिक्स में लगनेवाले रेयर अर्थ मैगनेट की आपूर्ति में वह उदार नहीं है . भारत को सोलर उपकरण तथा सुरंग खोदने की हैवी ड्यूटी मशीनें देने पर भी उसने व्यापार प्रतिबंध लगा रखे हैं .

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

35 लाख रु . का केला खा डाला भ्रष्टाचार से निकालते दिवाला

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, बोगस बिल बनाकर पैसा हड़पनेवाले बेईमानों की फौज हर जगह मौजूद रहती है. उत्तराखंड हाईकोर्ट ने उत्तराखंड क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा 12 करोड़ रुपए की सरकारी रकम का घोटाला करने पर बीसीसीआई को नोटिस भेजकर जवाब मांगा है. चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा तैयार की गई आडिट रिपोर्ट में बताया गया कि खिलाड़ियों ने 35,00,000 रुपए के केले खाए. क्या ऐसा संभव है? हमने कहा, केला सुपरफूड है जो एनर्जी देता है. उसमें पोटैशियम रहता है. खिलाड़ी जब खेलने में इतना परिश्रम करते हैं तो ऊर्जा हासिल करने के लिए केले खाएंगे ही! फास्ट बोलिंग करने, सिक्सर मारने, फील्डिंग के लिए दौड़ने में बहुत ताकत लगती है. इसलिए सीए ने 35 लाख रुपए के केले खाने का बिल ओके कर दिया.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, उत्तराखंड क्रिकेट एसोसिएशन पर खिलाड़ियों का मानसिक व शारीरिक शोषण करने का आरोप है. खिलाड़ियों को सिर्फ 100 रुपए रोज दिया जाता है और कोई सुविधा नहीं मिलती. ऊपर से

लाखों रुपए के केले खिलाने का फर्जी बिल बनाकर रकम पर हाथ साफ कर दिया गया.

हमने कहा, यदि अधिकारी होशियार होते तो बादाम, पिस्ता, अखरोट, काजू, किशमिश जैसे ड्राई फ्रूट खिलाने का और भी बड़ा बिल बना सकते थे. वह केले पर ही अटक गए. जांच यह भी होनी चाहिए कि केला कैसा था! साधारण केला या भुसावल का छोटा स्वादिष्ट और महंगा केला! गणेशजी को मोदक, कृष्ण कन्हैया को माखन-मिश्री, हनुमानजी को बूंदी के लड्डू और सत्यनारायण भगवान को केला या कदलीफल विशेष प्रिय है. दक्षिण भारत में केले के पत्ते पर भोजन परोसा जाता है. कच्चे केले की सब्जी और कोफ्ता बनता है. महाराष्ट्र में दूध में केला डालकर कालवण बनाया जाता है. धार्मिक आयोजनों में केले के तने का मंडप बनाया जाता है. जो इंसान अकेला हो उसे उदासी दूर करने के लिए केला खाना चाहिए. उसकी ऊर्जा और पोटैशियम से उसका डिप्रेशन दूर होगा.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यह सब तो ठीक है लेकिन केले का छिलका हमेशा डस्टबिन में डालना चाहिए. सड़क पर फेकोगे तो पैर फिसलने से किसी राहगीर को चोट लग सकती है.

शब्द-सागर : डॉ . सागर खादीवाला

CROSS WORD 12021 - डॉ. सागर खादीवाला

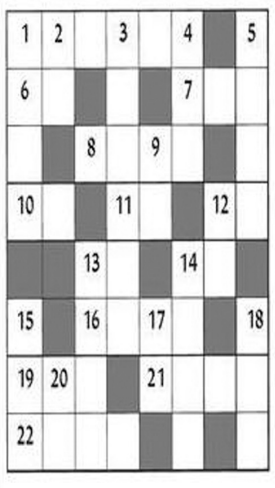

ऊपर से नीचे
1. बेल, श्रीफल (सं.) 2. प्रत्येक, एक-एक, छीनने वा हरण करने वाला 3. साधु दिख पड़ने वाला परंतु कपटी 4. पैगंबर ईश्वर का दूत (उर्दू) 5. गर्भ में सातवें मास में उत्पन्न होने वाला शिशु 9. रास्ता, पथ 12. वह पात्र जिससे पेय पदार्थ पिया जाए 13. नश्वर, नाश को प्राप्त होने वाला 14. एक वृक्ष जिसकी बेल पर प्राचीन काल में ग्रंथ लिखे जाते थे 15. पांचवां, सात स्वरों में पांचवां स्वर 17. पदार्थ का वह गुण जिसका ज्ञान केवल आंखों द्वारा ही होता है 18. थरथराहट, कांपना 20. कथन, कहना, उपदेश.

बाएं से दाएं
1. शहर से निष्कासित (उर्दू) 6. तपी धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा 7. रूप, आकृति, उपाय (उर्दू) 8. बहुत संपन्न 10. दरिया, सरिता 11. शिव, महादेव 12. तृषित, जिसे प्यास लगी हो 13. मनुष्याकृति पातालवासी सर्प जिसकी गणना देवयोनि में होती है 14. सीधा-सादा, सरल 16. एक प्रसिद्ध खेल जो चौंसठ खानों की बिसात पर बत्तीस गोटों से खेला जाता है 19. एक पक्षी, सुर्खाब 21. इधर-उधर की बात 22. बड़प्पन, महत्ता

Solution 12020

त	था	■	म	हा	न	व	मी
स	न	क	ना	■	ष्ठ	■	ना
ली	■	र्ज	■	म	■	मु	र
म	सि	■	भा	ल	चं	द्र	■
■	■	च्च	र	खा	■	क	वि
दु	गी	■	वा	न	र	■	ष
ब	■	मा	ह	■	वि	वि	ध
की	ट	■	न	ख	■	भा	र

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नवीन कार्यों में रूचि एवं सफलता मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा, वर्ष केमध्य में सत्ता सुख मिलेगा, स्थाई लाभ कायोग है, वर्ष के अन्त में माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांत रहेगा, अधिकारियोंका सहयोग मिलेगा, भागदौड़ के बाद सफलता मिलेगी, अधिकारियों से मतभेद में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को माता पिता के कमजोर स्वास्थ्य से मन अशांति का अनुभव करेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मतभेद भी होंगे, कर्क राशि के व्यक्तियों को संतोष रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को परिश्रम का फल अधिक प्राप्त होने का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भागदौड़ से अच्छी सफलता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, कार्यकुशल महत्वाकांक्षी होगा. संगीत के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेगा. साहसी और शूरवीर होगा. दिखने में भोलाभाला होगा. सामाजिक और मनोरंजक कार्यो में रूचि रहेगी. माता पिता को सुखी रखेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

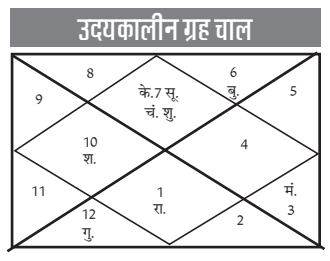

पंचांग

रा.मि. 24 संवत् 2082 आश्विन कृष्ण अष्टमीं चन्द्रवासरे प्रात: 6/26 तदुपरि नवमीं तिथौ रातअंत 4/24, मृगशिरा नक्षत्रे दिन 11/36, सिद्धि योगे दिन 9/50, कौलव करणे सू.उ. 5/54 सू.अ. 6/6, चन्द्रचार मिथुन, पर्व- मातृ नवमीं, सौभाग्यवती श्राद्ध, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण अष्टमीं/नवमीं को मृगशिरा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, पीतल आदि धातुओं में तेजी होगी. रूई, कपास, सूत, गुड़, खांड़, घी, चांवल, बाजरा तिल, सरसों के भाव में वृद्धि होगी. नारियल, जीरा, धनियां के भाव में समता रहेगी. भाग्यांक 1557 है.

मेष- यात्रा प्रवास में सावधानी रखें. यश प्राप्त होने को योग है. निजी पुरूषार्थ की प्राप्ति होगी. नवीन योजना बनेगी. मान सम्मान प्राप्त होगा.

वृषभ- बड़े जोखिम के कार्यो से बचने का प्रयास करें. पारिवारिक मामलों में विवाद से बचें. प्रयास सफल होगा. आर्थिक योजना बनेगी. संयम रखें.

मिथुन- धन की प्राप्ति होगी. यश, कीर्ति एवं पारिवारिक सुख रहेगा. व्यर्थ के विवाद से बचें. प्रसन्नता बनी रहेगी. लाभ होगा. यात्रा का योग है.

कर्क- अचानक धन लाभ का योग है. दूर की यात्रा हो सकती है. प्रियजनों से भेंटवार्ता होगी. पारिवारिक दायित्व पूर्ण पूर्ण होने से प्रसन्नता रहेगी.

सिंह- दूसरों के द्वारा आपका कार्य बनेगा. संतान आदि के संबंध में चिन्ता रहेगी. कोर्ट कचहरी आदि के कार्यो में सावधानी रखकर कार्य करें.

कन्या- मांगलिक कार्यो का योग है. पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. वाहनादि का सुख मिलेगा. दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार प्राप्त होगा.

तुला- अनचाही यात्रा संभाव्य है. शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. नियोजित कार्यो में सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगा. संयम रखें.

वृश्चिक- उत्साहवर्धक समाचार मिलने का योग है. अधिकारियों का सहयोग रहेगा. पारिवारिक जीवन आनन्ददायक रहेगा. मांगलिक कार्य बनने का योग है.

धनु- यात्रा सुखद रहेगी. बड़े खर्चो से बचने का प्रयास करें. असावधानी से नुकसान हो सकता है. वाणी पर संयम रखकर कार्य करना हितकर रहेगा.

मकर- पड़ोसी से विवाद हो सकता है. भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी. ईश्वर के प्रति आस्था रहेगी. धन लाभ का योग है. मित्र मिलन का योग है.

कुम्भ- भावुकता में लिया गया निर्णय कष्टकारी होगा. रचनात्मक कार्यो की प्रगति होगी. किसी व्यक्ति से आपका विवाद होगा, संयम रखें.

मीन- व्यापार व्यवसाय में व्यस्तता रहेगी. किसी अनजान भय और चिन्ता से मन व्यथित रहेगा. किसी अधिकारी से सहयोग प्राप्त हो सकता है.

SUDOKU 7153

6	9			7	4		8	
	8	5	6	2			4	9
7						6		3
	3	9	5				1	
1				8				5
	6				2	9	3	
4		7						2
8	2			5	9	1	7	
	1		2	3			5	8

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7152

6	5	3	9	1	7	2	8	4
9	1	8	2	6	4	3	7	5
7	4	2	5	3	8	1	9	6
3	7	1	6	9	2	4	5	8
8	6	9	1	4	5	7	2	3
5	2	4	8	7	3	9	6	1
2	9	5	4	8	1	6	3	7
4	3	6	7	5	9	8	1	2
1	8	7	3	2	6	5	4	9